https://shikshabodh.in/

SHIKSHA BODH

(The Journal of Education and Humanities)

ISSN: 3139-5880 IMPACT FACTOR: 6.50

VOLUME-1|ISSUE-1|Jan-March, 2026

अमेरिका ईरान संघर्ष का भारत तथा दक्षिण पूर्व एशिया में सामाजिक –आर्थिक एवं शिक्षा पर प्रभाव

डॉ० शिवेश प्रसाद राय

असिस्टेंट प्रोफेसर विज्ञान विभाग (राजनीति)

अमरनाथ मिश्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय दुबेछपरा, बलिया

ईमेल – shiveshrai73@gmail-com

Mobile No- 9450725750

सारांश

इक्कीसवीं सदी में कोई एक भूदेश या गुट में सैद्धांतिक संघर्ष नहीं रह गया है-, बल्कि उसका प्रभाव अन्य देश में विभिन्न क्षेत्र जैसे ऊर्जा, व्यापार, वित्त, खाद्य सुरक्षा, रोजगार, आवास, सामाजिक स्थिरता, शांति आदि तक व्यापक रूप से फैलता और दिखता है। 28 फरवरी 2026 से शुरू हुए इजरायल, अमेरिकाईरान युद्ध और इसके परिणामस्वरूप लाल सागर-, होर्मुज जलडमरूमध्य में उपनिबंधन ने इसपर परिवर्तनीय वैश्विक आर्थिक स्थिति को प्रभावित किया। होर्मुज जलडमरूमध्य विशेष रूप से दक्षिणपूर्व एशिया की दिशा केऊर्जा या -पार का अत्यंत महत्वपूर्ण मार्ग है और इसक े उपनिबंधन ने तेल, गैस, उर्वरक तथा समुद्री परिवहन लागत को बहुत अधिक बढ़ा दिया है। विश्व बैंक के अनुसार 2026 के इस संघर्ष के कारण वैश्विक आर्थिक वृद्धि पर गंभीर दबाव पड़ा है तथा ऊर्जा कीमतों, मुद्रास्फीति और वित्तीय लागत में वृद्धि के कारण हालात खराब कर दिया हैं। भारत जैसे बड़ी जनसंख्या वाले विकासशील और ऊर्जाआयात निर्भर देश -के लिए इस संघर्ष का प्रभाव पेट्रोलियम, एलपीजी, प्राकृतिक गैस, परिवहन, विनिर्माण, कृषि और घरेलू उपयोग तक पहुंचता है। दूसरी ओर, दक्षिण पूर्व एशिया के अनेक देश भी मध्य पूर्व से तेल और गैस पर प्रायः निर्भर हैं। अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी- IEA के अनुसार संकट से पहले दक्षिण पूर्व एशिया के लगभग-60 प्रतिशत कच्चे तेल आयात और लगभग एक तिहाई गैस का आयात खाड़ी देश से आते थे। यह शोध आलेख इस तथ्य को विश्लेषित करता है कि युद्ध का सामाजिक प्रभाव केवल सकल घरेलू उत्पाद)GDP(, तेल मूल्य अथवा व्यापार घाटे से नहीं मापा जा सकता। इसका मूल्यांकन मानव पूंजी, सामाजिक असमानता, शिक्षा के विपोषण, वित्तीय संकट की निरंतरता, कौशल विकास और शांतिस्थिरता तथा पर्यावरणीय संकट के संदर्भ में भी किया जाना आर्थिक पुनर्निर्माण -रणनीति का एक प्रमुख घटक बनायाआवश्यक है। अतः शिक्षा को संकट जाना चाहिए।-प्रबंधन और दीर्घकालिक सामाजिक-

मुख्य शब्द:- अमेरिकाईरान संघर्ष-, युद्ध, व्यापार, ऊर्जा सुरक्षा, भारत, दक्षिणपूर्व एशिया-, सामाजिक प्रभाव, आर्थिक प्रभाव, शिक्षा, मानव पूंजी, शांति शिक्षा, सतत विकास।

1- प्रस्तावना:-

21वीं सदी की वैश्विक अर्थव्यवस्था बहुकोणीय एवं परस्पर निर्भरता पर आधारित है। किसी एक भौगोलिक क्षेत्र में उपजी सैद्धांतिक संकट कुछ ही समय में हजारों किलोमीटर दूर स्थित देशों की अर्थव्यवस्था और समाज को प्रभावित कर सकती है। ऊर्जा, रसायन, उर्वरक, खाद्य सामग्री, समुद्री परिवहन, वित्तीय बाजार और डिजिटल आपूर्ति श्रृंखलाओं का वैश्विक परस्परता नए प्रभाव की भौगोलिक सीमाओं को और अधिक विस्तृत कर दिया है।

इजरायलईरान संघर्ष इसका आधुनिक उदाहरण है। संघर्ष का प्रभाव भारत-अमेरिका-, चीन, जापान, बांग्लादेश, श्रीलंका, नेपाल, पाकिस्तान, इंडोनेशिया, दक्षिण कोरिया तथा । ASEAN देशों तक दिखता है। होर्मुज जलडमरूमध्य के संकट ने विशेष रूप सेएशियाई देशों की ऊर्जा सुरक्षा को प्रभावित किया है। विश्व बैंक ने 2026 में वैश्विक विकास दर 2.5 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया, जो 2025 के 2.9 प्रतिशत से कम है, विश्व बैंक ने ऊर्जा कीमतें, मुद्रास्फीति और वित्तीय परिस्थितियों को इसके प्रमुख जोखिमों मे माना है।

इस परिप्रेक्ष्य में युद्ध का अध्ययन केवल अंतरराष्ट्रीय संबंधों अथवा आर्थिक अध्ययन का विषय नहीं है। यह अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र,

राजनीतिक विज्ञान, पर्यावरण अध्ययन और शिक्षा का भी विषय है।

2. युद्ध, व्यापार और समाजरू एक अंतर्संबंधित ढांचाः-

आधुनिक वैश्विक आर्थिक व्यवस्था में युद्ध का प्रभाव केवल युद्धरत दिशा तक सीमित नहीं रह जाता, बल्कि व्यापार, ऊर्जा, परिवहन, उत्पादन, रोजगार, परिवार की आय, पर्यावरण और सामाजिक संस्थाओं तक फैलता है। समुद्री मार्गों में उपनिबंधन से ऊर्जा आपूर्ति और कीमत प्रभावित होती है, जिससे परिवहन एवं उत्पादन लागत बढ़ती है और महंगाई का दबाव बढ़ता है। इसका सबसे अधिक प्रभाव निम्न एवं निम्नमध्यम वर्गीय परिवारों पर पड़ता है-, जिससे सामाजिक असमानता बढ़सकती है।

युद्ध से व्यापारिक अनिश्चितता, निवेश में कमी और रोजगार के अवसरों में कमी हो सकती है। आय घटने पर परिवार भोजन, स्वास्थ्य और आवास जैसी आवश्यकताओं को प्राथमिकता देते हैं, जिससे शैक्षिक, उच्च शिक्षा, कोचिंग, पुस्तक और डिजिटल संसाधन पर खर्च कम हो सकता है। परिणामस्वरूप वित्तीय शिक्षा की निरंतरता, शिक्षा गुणवत्ता एवं सीखने के अवसर प्रभावित होते हैं तथा शैक्षणिक आउटपुट में बाधा उत्पन्न होती है।

इसलिए युद्ध का सामाजिक लागत का आकलन केवल सकल घरेलू उत्पाद, व्यापार घाटे या मानव पूंजी के नुकसान से ही नहीं, बल्कि शिक्षा पर पड़ने वाले दीर्घकालिक प्रभाव से भी किया जाना चाहिए। संकट के समय छात्रवृत्ति, अनुदान, पोषण, डिजिटल संसाधन, कौशल विकास और सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करके शिक्षा को युद्ध के दुष्प्रभावों को कम करने वाले मुख्य माध्यम एवं परिवर्तनकारी कारक के रूप में विकसित किया जा सकता है।

3. इजरायल-ईरान संघर्ष और वैश्विक ऊर्जा व्यवस्था-

समकालीन वैश्विक आर्थिक व्यवस्था में ऊर्जा, परिवहन, कृषि, उद्योग, व्यापार और सामाजिक जीवन की आधारभूत आवश्यकताएं हैं। इसलिए होर्मुज जलडमरूमध्य जैसे रणनीतिक समुद्री मार्गों में उपनिबंधन का प्रभाव वैश्विक स्तर पर पड़ता है। इजरायलअमेरिका -ईरान-संघर्ष के दौरान होर्मुज में तेल, प्राकृतिक गैस)LNGऔर उर्वरक की कीमतों में तेज वृद्धि हुई (, जिससे परिवहन, उत्पादन, कृषि लागत और खाद्य लागत बढ़ी तथा वैश्विक मुद्रास्फीति पर दबाव पड़ा। ऊर्जा और खाद्य कीमतों में वृद्धि का प्रभाव निम्नआय वाले परिवारों पर - अधिक पड़ता है, क्योंकि उनकी आय का बड़ा हिस्सा भोजन, ईंधन और परिवहन जैसी आवश्यकताओं पर खर्च होता है। इससे शिक्षा और स्वास्थ्य पर होने वाला व्यय घट सकता है तथा वित्तीय उपलब्धता, उपयोग और निरंतरता प्रभावित हो सकती है। इस कारण ऊर्जा संकट केवल नहीं 'तेल की कीमत का संकट', बल्कि मानव विकास, मानव संसाधन एवं मानव पूंजी का संकट भी बन जाता है।

भारत और दक्षिणपूर्व एशिया के लिए यह संकट दीर्घकालिक ऊर्जा सुरक्षा-, ऊर्जा स्रोतों के विविधीकरण, नवीकरणीय ऊर्जा, ऊर्जा दक्षता और आपूर्ति श्रृंखला की मजबूती की आवश्यकता को रेखांकित करता है। शिक्षा इसपरिवर्तन का महत्वपूर्ण आधार बन सकती है। पाठ्यक्रमों में ऊर्जा, भू -राजनीति, ऊर्जा संकट, नवीकरणीय ऊर्जा, हरित ऊर्जा, जलवायु परिवर्तन, जैविक खेती, सतत एवं धारणीय विकास, शांति शिक्षा और विविधतापूर्ण वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला को शामिल कर के विद्यार्थियों में ऊर्जासम्पन्नता और संकट मानव पूंजी - विकास किया जा सकता है।

4. भारत पर आर्थिक प्रभावः-

4.1 ऊर्जा सुरक्षाः-

भारत अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आयात पर काफी निर्भर है। इसलिए मध्य पूर्व में लंबे समय तक चलने वाला संघर्ष भारत के ऊर्जा सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण चुनौती बन सकता है। इजरायलअमेरिका संघर्ष के दौरान स्छळ आपूर्ति में अनिश्चितता -ईरान-दिखाई दी। पेट्र◌ोनेट LNG के अनुसार सितंबर 2026 की LNG आपूर्ति को लेकर अनिश्चितता बनी रही और संघर्ष के कारण उसके 56 LNG टैंकर प्रभावित हुए तो इस स्थिति से निपटने के लिए भारत ने अमेरिका, नाइजीरिया, अंगोला और ओमान जैसे वैकल्पिक स्रोतों से LNG आयात बढ़ाने के प्रयास बढ़ाए। यह परिस्थिति भारत की उस रणनीति की आवश्यकता को रेखांकित करती है जिसमें ऊर्जा आपूर्ति को किसी एक क्षेत्रीय देश पर अत्यधिक निर्भर रखने के बजाय ऊर्जा स्रोतों का विविधीकरण)Energy Diversificationकिया जाए। (दीर्घकाल में भारत के लिए नवीकरणीय ऊर्जा, सौर एवं पवन ऊर्जा, हरित हाइड्रोजन, परमाणु ऊर्जा तथा ऊर्जा दक्षता में निवेश बढ़ाना भी आवश्यक होगा। इस संदर्भ में शिक्षा और कौशल विकास की भूमिका महत्वपूर्ण है, क्योंकि ऊर्जा क्षेत्र में प्रशिक्षण और तकनीकी रूप से दक्ष मानव संसाधन की आवश्यकता होगी।

4.2 व्यापार और परिवहन -

इजरायलदूसरा महत्वपूर्ण प्रभाव व्यापार और समुद्री क्षेत्र के रूप में दिखाई देता है। होर्मुज अमेरिकासंघर्ष का भारत का पर-ईरान-

जलडमरूमध्य में अनिश्चितता, जहाजों की उपलब्धता में कमी, बढ़े हुए ईंधन खर्च और समुद्री जोखिम के कारण वैश्विक माल ढुलाई की दर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। जल ढुलाई में 2026 में भारत का व्यापार घाटा बढ़कर 31.98 अरब डॉलर के छह महीने के उच्च स्तर पर पहुंच गया। आयातों पर बढ़े हुए तेल की कीमतें तथा बढ़ी हुई वैश्विक माल ढुलाई लागत का दबाव रहा।
युद्ध की इस अवधि में भारत के वस्तु आयात ने 44.24 अरब डॉलर का रिकॉर्ड भी दर्ज किया, फिर भी समुद्री परिवहन में अनिश्चितता, कंटेनरों की कमी, भारतीय बंदरगाह पर हमले और माल की आवाजाही में देरी ने चावल, गेहूं, औषधि और अभियांत्रिकीय सामान जैसे निर्यातों की लागत और प्रक्रिया को प्रभावित किया। समुद्री परिवहन की बढ़ती लागत का प्रभाव विशेष रूप से भारतीय तेल आयात पर पड़ा। अगस्त 2026 में रिलायंस ने इराक से कच्चा तेल लाने के लिए एक बड़े टैंकर पर लगभग 23-25 मिलियन डॉलर खर्च किया, जो युद्ध से पहले के लगभग 2 मिलियन डॉलर के सामान्य नौपरिवहन लागत की तुलना में काफी अधिक था। यह उदाहरण दर्शाता है कि युद्ध के कारण न केवल तेल की कीमतें बढ़ीं, बल्कि तेल को भारत तक पहुंचाने की लागत और जोखिम भी कई गुना बढ़गए।
इस प्रकार युद्ध से परिवहन संकट भारत के लिए आयात लागत, व्यापार घाटे, नियामक प्रक्रिया और घरेलू कीमतों पर चारों ओर से चुनौतियां उत्पन्न करता है। दीर्घकाल में भारत को वैकल्पिक समुद्री मार्ग, बंदरगाह अवसंरचना, ऊर्जा स्रोतों के विविधीकरण और अधिक लचीली आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत करना होगा। शिक्षा के संदर्भ में इसका महत्व यह है कि भविष्य के विद्यार्थियों को अंतःराष्ट्रीय व्यापार, रसद प्रबंधन, आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन, समुद्री सुरक्षा, वैकल्पिक समाधान और भूराजनीतिक जोखिम की समझ दी जाए, ताकि वे बदलती वैश्विक आर्थिक स्थिति के अनुरूप रोजगार और उत्पादन के लिए तैयार हो सकें।

5. भारत-ईरान संबंध और रणनीतिक व्यापार-

भारतईरान संबंध ऊर्जा व्यापार तक स-ीमित नहीं हैं, बल्कि व्यापार, क्षेत्रीय सुरक्षा एवं स्थिरता, संपर्क, मध्य पूर्व तक पहुंच और रणनीतिक विवेकशीलता से भी जुड़े हैं। इस संदर्भ में चाबहार बंदरगाह भारत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह भारत को ईरान के माध्यम से मध्य पूर्व और आगे के बाजारों तक वैकल्पिक व्यापार मार्ग प्रदान करता है। चाबहार का संबंध अंतरराष्ट्रीय उत्तरदक्षिण -) परिवहन गलियारेINSTCसे है (, जो भारत के क्षेत्रीय भूराजनितिक संपर्क और व्यापार रणनीति को मजबूत करता है।-
ईरान भारत के लिए बास्मती चावल, चाय, औषधियां और अन्य वस्तुओं का महत्वपूर्ण बाजार है। परंतु युद्ध के कारण समुद्री परिवहन और बंदरगाह संचालन प्रभावित होने से भारतीय निर्यात पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़सकता है। इससे व्यापार, कृषि निर्यात और संबंध से जुड़े रोजगार प्रभावित होने की संभावना है। बड़ी संख्या में भारतीय कामगार खाड़ी देशों में विभिन्न प्रकार के कार्य करते हैं, साथ ही बड़ी मात्रा में विदेशी मुद्रा भारत भेजते हैं।
इजरायलईरानसंघर्ष ने भारत के सामने एक महत्वपूर्ण रणनीतिक चुनौती प्रस्तुत की है। भारत को अमेरिका के साथ अपने -अमेरिका-संबंधों को बनाए रखते हुए ईरान के साथ चाबहार और INSTC जैसी परियोजनाओं को भी स्थिर रखना होगा। इसलिए ऊर्जा सुरक्षा, रणनीतिक विवेकशीलता, बहुराजनीति-सरेखीय कूटनीति और आर्थिक हितों के बीच संतुलन आवश्यक है। शिक्षा के क्षेत्र में भू-, अंतरराष्ट्रीय व्यापार, ऊर्जा सुरक्षा और परिवहन गलियारों के अध्ययन के माध्यम से बदलती वैश्विक स्थिति की समझ विकसित की जा सकती है।

6- भारत में युद्ध का प्रभावः-

इजरायलईरान संघर्ष का भारत पर प्रभाव ऊर्जा-अमेरिका-, व्यापार और कूटनीति के साथसाथ सामाजिक और मानवीय आयामों में भी - पड़ता है। युद्ध में बड़ी संख्या में भारतीय रोजगार औरव्यवसाय जुड़े हैं, इसलिए इस संघर्ष की स्थिति में उनकी सुरक्षा, आवागमन, रोजगार और प्रवासी आय प्रभावित हो सकती है। हवाई एवं समुद्री मार्गों में उपनिबंधन तथा ऊर्जा कीमतों में वृद्धि से परिवहन, ईंधन और दैनिक उपभोग की लागत बढ़सकती है।
ऊर्जा और खाद्य वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि समग्र महंगाई और घरेलू जीवनशैली पर दबाव डालती है। इसका प्रभाव विशेष रूप से शैली पर निम्न मध्यम वर्गीय परिवारों पर अधिक होता है जिससे शिक्षा, स्वास्थ्य, पुस्तकें, डिजिटल संसाधन और उच्च शिक्षा पर होने वाले खर्च में कटौती हो सकती है। इससे विद्यार्थियों की शिक्षा की निरंतरता और भविष्य की मानव पूंजी प्रभावित हो सकती है।इसलिए युद्ध के सामाजिक प्रभाव और शैक्षिक प्रभाव का मूल्यांकन केवल महंगाई और रोजगार के आंकड़ों से नहीं, बल्कि सामाजिक असमानता, शिक्षा और स्वास्थ्य पर पड़ने वाले व्यापक प्रभावों से भी किया जाना चाहिए। संकट के समय छात्रवृत्ति, पोषण, निःशुल्क पाठ्य सामग्री, डिजिटल संसाधन, परिवहन सहायता और कौशल विकास को मजबूत करना आवश्यक है। इस प्रकार शिक्षा सामाजिक न्याय की कुंजी और आर्थिक संकट के दीर्घकालीन प्रभावों को कम करने के लिए एक महत्वपूर्ण माध्यम बन सकती है।

7.शिक्षा पर आर्थिक संकट का प्रभावः-

आर्थिक और राजनीतिक संकटों का शिक्षा पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इजरायलईरान संघर्ष से उत्पन्न ऊर्जा संकट-अमेरिका-, महंगाई और व्यापारिक अनिश्चितता के कारण भोजन, ईंधन, बिजली और परिवहन की लागत बढ़ने पर निम्नआय वाले परिवार शिक्षा से जुड़ी खर्चों में कटौती कर हैं। इसे भोजन और ऊर्जा शिक्षा संबंधी अत्यधिक बोझ के रूप में समझा जा सकता है। आर्थिक दबाव के कारण ट्यूशन, कोचिंग, पुस्तकें, डिजिटल उपकरण और उच्च शिक्षा पर खर्च कम हो सकता है। ग्रामीण और कमजोर वर्गों में परिवहन लागत बढ़ने और आय घटने से स्कूल छोड़ने जोखिम बढ़ता है जबकि डिजिटल संसाधनों की सीमित उपलब्धता से डिजिटल विभाजन का(ड्रॉपआउट) और शैक्षिक असमानता और गहरी हो सकती है।

शिक्षा में इस प्रकार के व्यवधान दीर्घकाल में कौशल, रोजगार, आय और उत्पादन को प्रभावित करते हैं। इसलिए शिक्षा को केवल संकट से प्रभावित पीड़ित पक्ष के रूप में नहीं, बल्कि संकट के प्रभावों को कम करने वाली संरचनात्मक संस्था और सदाबहार संसाधन के रूप में देखना चाहिए। संकट के समय छात्रवृत्ति, पोषण, निःशुल्क पाठ्य सामग्री, डिजिटल संसाधन, परिवहन सहायता और कौशल विकास जैसे उपायों को मजबूत करना आवश्यक है।

8. शिक्षा और मानव पूंजी का महत्व-

किसी देश की दीर्घकालीन आर्थिक गुणवत्ता उसके प्राकृतिक संसाधनों और पूंजी के साथ साथ मानव पूंजीज्ञान-, कौशल, स्वास्थ्य और नवाचार क्षमता पर निर्भर करती है और शिक्षा मानव पूंजी निर्माण का प्रमुख माध्यम है। इसलिए अमेरिकाईरान संघर्ष जैसे संकट के दौरान शिक्षा में निवेश बनाए रखना दीर्घकालीन आर्थिक विकास के लिए आवश्यक है।

युद्ध और आर्थिक संकट में ऊर्जा, खाद्य सुरक्षा, स्थिरता एवं सामाजिक सुरक्षा पर सरकारी व्यय बढ़ने से शिक्षा बजट में कटौती का खतरा हो सकता है, लेकिन शिक्षा में कमी से कौशल और उत्पादन घटता है, आय एवं रोजगार के अवसर सीमित होते हैं तथा सामाजिकआर्थिक असमानता बढ़ती है। इसके विपरीत, शिक्षा और कौशल विकास में निरंतर निवेश संकट के बाद आर्थिक पुनर्निर्माण को गति प्रदान कर सकता है।

विशेष रूप से नवीकरणीय ऊर्जा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल तकनीक, आपूर्तिश्रृंखला प्रबंधन, हरित तकनीक और सतत कृषि जैसे क्षेत्रों में कुशल मानव संसाधन भारत और दक्षिणपूर्व एशिया की आर्थिक लचीलेपन को मजबूत कर सकता है। इसलिए शिक्षा को केवल - सामाजिक अधिकार के रूप में नहीं, बल्कि विकास नीति, निवेश और आर्थिक सुरक्षा के आधार के रूप में देखा जाना चाहिए।

भारत में संकट के समय गरीब और कमजोर वर्गों के लिए छात्रवृत्ति, डिजिटल संसाधन, कौशल प्रशिक्षण, व्यावसायिक शिक्षा और उच्च शिक्षा तक पहुंच को मजबूत करना आवश्यक है। इसलिए मूलभूत यह नहीं होना चाहिए कि संकट में शिक्षा पर खर्च कम किया जाए, बल्कि यह होना चाहिए कि शिक्षा को अधिक लचीलेपन के साथ आर्थिक और दीर्घकालीन विकास का प्रभावी साधन बनाया जाए।

9.दक्षिण पूर्व एशिया पर प्रभाव-

इजरायलपूर्व एशिया पर व्यापक प्रभा-ईरान संघर्ष का दक्षिण-अमेरिका-व पड़ा है क्योंकि क्षेत्रीय आर्थिक वृद्धि और औद्योगिक गतिविधियों में मिडिलईस्ट से होने वाले ऊर्जा आयात पर निर्भरता है। अं-तर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी)IEA(के अनुसार, संकट से पहले दक्षिण-पूर्व एशिया के लगभग-60 प्रतिशत कच्चे तेल और एक तिहाई गैस आयात मिडिलज से होते हैं। होर्मु (खाड़ी क्षेत्र) ईस्ट-जलडमरूमध्य में उपनिबंधन ने इस ऊर्जा निर्भरता को जोखिम में डाल दिया।

इस संकट ने । ASEAN देशों के सामने ऊर्जा संकट, खाद्य एवं ऊर्जा सुरक्षा संकट तथा महंगाई और जीवनयापन की लागत की चुनौतियां उत्पन्न की हैं। ईंधन और बिजली की कीमतें बढ़ने से परिवहन विनिर्माण, पर्यटन और व्यापार लागत बढ़ी, जबकि महंगी ऊर्जा ने कृषि और खाद्य सुरक्षा पर दबाव डाला। इसका प्रभाव विशेष रूप से गरीब और निम्नमध्यम आय वर्गीय परिवारों पर पड़ा-, क्योंकि बढ़ते भोजन, ईंधन और परिवहन खर्चों के कारण उनके लिए आवश्यक संसाधन कम हो गए।

शिक्षा के दृष्टिकोण से विद्यालयों और विश्वविद्यालयों की ऊर्जा एवं परिवहन लागत बढ़ने के कारण शैक्षिक संचालन लागत बढ़सकती है। इसलिए ASEAN देशों को पाठ्यक्रम में ऊर्जा सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन, नवीकरणीय ऊर्जा, हरित तकनीक, वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला, वैकल्पिक शिक्षण पद्धतियों और भू राजनीति को शामिल करना चाहिए।

इसलिए यह संघर्ष केवल दक्षिणपूर्व एशिया के लिए ऊर्जा आपूर्ति संकट नहीं-, बल्कि ऊर्जा विविधीकरण, खाद्य सुरक्षा, आर्थिक लचीलापन और मानव पूंजी निर्माण के दीर्घकालीन चुनौतियों का भी संकेत है। शिक्षा इस संकट से उबरने और भविष्य की सामाजिक-आर्थिक विविधता के लिए एक महत्वपूर्ण आधार बन सकती है।

10. दक्षिण-पूर्व एशिया के लिए शिक्षा का महत्वः-

इजरायल पूर्व एशिया के लिए यह-ईरान संघर्ष और ऊर्जा संकट ने दक्षिण-अमेरिका-स्पष्ट किया है कि शिक्षा केवल पारंपरिक ज्ञान और रोजगार कौशल तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। ऊर्जा आयात, समुद्री व्यापार, विनिर्माण और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला पर निर्भर इस क्षेत्र को शिक्षा में नवीनता और प्रासंगिकता जोड़नी होगी ताकि विद्यार्थी ऊर्जा सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन, तकनीकी परिवर्तन और वैश्विक आर्थिक स्थिति को समझ सकें।

भविष्य की शिक्षा में नवीकरणीय ऊर्जा, सौर तकनीक, विद्युत गतिशीलता, ऊर्जा दक्षता, सतत परिवहन, जलवायु सुरक्षा, आपूर्ति-श्रृंखला प्रबंधन, समुद्री सुरक्षा, डिजिटल अर्थव्यवस्था और आपदा प्रबंधन जैसे विषयों को अंतर्विषयी रूप से शामिल किया जाना चाहिए। इससे विद्यार्थियों में रोजगारसमझ-साथ संकट-योग्यता के साथ-, नवाचार और समस्यासमाधान कौशल विकसित होंगे।-

ऊर्जा क्षेत्र में शिक्षा के अतिरिक्त अध्ययन एवं सीखने के कौशल जैसे सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, परमाणु ऊर्जा, बैटरी, इलेक्ट्रिक वाहन और हरित तकनीक रोजगार के नए अवसर भी उत्पन्न करेंगे। इसलिए उच्च शिक्षा और तकनीकी संस्थानों को इन क्षेत्रों में अनुसंधान और शिक्षण कार्यक्रम विकसित करने चाहिए।

इसलिए दक्षिण पूर्व एशिया में शिक्षा को-'रोजगार के लिए शिक्षा' से आगे बढ़ाकर 'ऊर्जा निर्माण, आर्थिक लचीलापन और सतत विकास के लिए शिक्षा' के रूप में पुनर्परिभाषित करना आवश्यक है। भविष्य की सुरक्षा के लिए ऊर्जा विविधीकरण के साथसाथ ज्ञान-, कौशल और मानव पूंजी का विविधीकरण भी अनिवार्य है।

प्राचीन लोकाचारों और रीतिरिवाजों को भी नए वैज्-आनिक ज्ञान और दृष्टिकोण से परखा जाना चाहिए। उपयोगी और सुसंगत मान्यताओं को अनुकूल परिवर्तनों के साथ पुनः स्थापित किया जा सकता है।

11 शिक्षा और राष्ट्रीय ऊर्जा सुरक्षा का संबंधः-

भारत और दक्षिणईरान संघर्ष तथा ऊर्जा संकट यह-पूर्व एशियाई देशों के लिए अमेरिका- संकेत करते हैं कि ऊर्जा केवल आर्थिक या विदेशनीतिक विषय नहीं हैं, बल्कि शिक्षा का भी महत्वपूर्ण विषय है। इसलिए विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में ऊर्जा साक्षरता)Energy Literacy को शिक्षा का एक महत्वपूर्ण घटक बनाया जाना चाहिए। ऊर्जा साक्षरता के अंतर्गत (विद्यार्थियों को ऊर्जा के उत्पादन, आयात, वितरण और उपभोग के आर्थिक, सामाजिक और भूराजनीतिक प्रभावों को समझाया जाना चाहिए। इसके लिए -ऊर्जा, अर्थशास्त्र, पर्यावरण, भूगोल, राजनीति, अंतरराष्ट्रीय संबंध और तकनीक को अंतर्विषयी रूप से जोड़ा जा सकता है। विद्यार्थी तेल की कीमत, मुद्रास्फीति, ऊर्जा भूराजनीति-, नवीकरणीय ऊर्जा, जैविक खेती, जैविक उर्वरक, बैटरी, विद्युत वाहन, वैकल्पिक ऊर्जा और ऊर्जा दक्षता जैसे विषयों का अध्ययन कर सकते हैं। इस शिक्षा को स्थानीय जीवन से जोड़ना भी आवश्यक है। उदाहरण के लिए, विद्यार्थी यह समझ सकते हैं कि होर्मुज जलडमरूमध्य में संकट LPG, पेट्रोल, डीजल, उर्वरक और परिवार की शिक्षाव्यय को कैसे प्रभावित कर सकता है। इससे वैश्विककरण और भूराजनीत उनके लिए केवल शैक्षणिक अवधारणाएं न रहकर दैनिक जीवन से जुड़ी वास्तविकताए -र-बन जायेंगी। उच्च शिक्षा में ऊर्जा भू◌ाजनीति, ऊर्जा अर्थव्यवस्था, सतत विकास, वैश्विक आपूर्तिश्रृंखला-, नौवहन सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन और हरी तकनीक जैसे अंतर्विषयी विषयों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। साथ ही ऊर्जा संरक्षण, सौर ऊर्जा और ऊर्जा दक्षता से संबंधित व्यावहारिक परियोजनाएं भी विकसित की जानी चाहिए।

इस प्रकार ऊर्जा और शिक्षा का संबंध दिशात्मक हैक्षा को प्रभावित करता हैऊर्जा संकट शि-, जबकि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत करने के लिए आवश्यक वैज्ञानिक, तकनीकी और कुशल मानव संसाधन तैयार करती है। इसलिए ऊर्जा साक्षरता राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक लचीलापन, सतत विकास और मानव पूंजी निर्माण का महत्वपूर्ण आधार है।

12. शांति शिक्षा की आवश्यकता-

अमेरिकाराजनीतिक घटनाएं स्पष्ट करती हैं कि शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार परक कौशल विकास नहीं-ईरान संघर्ष जैसी भू-, बल्कि जिम्मेदार, विवेकशील और शांति प्रिय नागरिकों का निर्माण भी होना चाहिए। युद्ध के प्रभाव ऊर्जा, महंगाई, बेरोजगारी, खाद्य सुरक्षा, विस्थापन और शिक्षा संकट तक फैलते हैं। इसलिए विद्यार्थियों को युद्ध के इन बहुआयामी प्रभावों का तार्किक और आलोचनात्मक अध्ययन कराना आवश्यक है। शांति शिक्षा)Peace Educationका उद्देश्य केवल युद्ध का विरोध करना नहीं (, बल्कि संवाद, सह-अस्तित्व, सहिष्णुता, संघर्ष समाधान और लोकतांत्रिक मूल्यों को विकसित करना है। विद्यार्थियों को यह समझना चाहिए कि अंतःराष्ट्रीय विवादों का समाधान केवल शारीरिक संघर्ष से नहीं, बल्कि कूटनीति, संवाद और बहुपक्षीय सहयोग से भी संभव है। डिजिटल युग में शांति शिक्षा को मीडिया साक्षरता से जोड़ना भी आवश्यक है, क्योंकि युद्ध के समय सोशल मीडिया पर दुष्प्रचार, झूठी

खबरें और भावनात्मक वीडियो तेजी से फैलते हैं। इसलिए विद्यार्थियों को विश्वसनीयता जांचने, तथ्यों और खबरों की आलोचनात्मक समीक्षा करने और सूचनाओं के प्रभाव की समझ विकसित करने की शिक्षा दी जानी चाहिए। UNESCO के दृष्टिकोण से शिक्षा केवल युद्ध प्रभावित क्षेत्रों की नहीं, बल्कि सुरक्षा, सामाजिक स्थिरता, मानसिकसामाजिक सहयोग और आशा प्रदान करने वाली संस्थाओं की भी होनी चाहिए। इसलिए शांति शिक्षा, और मीडिया साक्षरता को शिक्षा के पारस्परिक आयामों के रूप में विकसित किया जाना आवश्यक है। इससे जिम्मेदार, आलोचनात्मक, विवेकशील और वैश्विक नागरिक तैयार किए जा सकेंगे, जो युद्ध और विभाजन के स्थान पर संवाद, सहयोग, बहुलतावाद और सहअस्तित्व को मजबूत करेंगे।

13. डिजिटल शिक्षा और संकटशिक्षा प्रतिरोधी-

युद्ध, महामारी, प्राकृतिक आपदा, ऊर्जा संकट और आर्थिक अनिश्चितता जैसी परिस्थितियों में विद्यालय और विश्वविद्यालय की पारंपरिक व्यवस्था बाधित हो सकती है। इसलिए ऐसी संकट) प्रतिरोधी-Resilientशिक्षा व्यवस्था विकसित करना आवश्यक है (, जो कठिन परिस्थितियों में भी विद्यार्थियों की शिक्षा की निरंतरता बनाए रख सके। अमेरिकाईरान संघर्ष से उत्पन्न ऊर्जा एवं परिवहन संकट - इस आवश्यकता को और प्रबल करता है। ऐसी व्यवस्था में डिजिटल शिक्षा, मुक्त शैक्षिक संसाधन)OER(, ऑफलाइन डिजिटल सामग्री और सामुदायिक शिक्षामिका महत्वपूर्ण हो सकती है। साथ ही छात्रों को डिजिटल शिक्षणअध्ययन की भू/, ऑनलाइन मूल्यांकन और संकटप्रबंधन की शिक्षा देना आवश्यक है।

निम्नआय और ग्रामीण विद्यार्थियों के लिए उपकरण, इंटरनेट और विद्युत की उपलब्धता सुनिश्चित करना आवश्यक है, अन्यथा डिजिटल शिक्षा व्यर्थ हो सकती है और शैक्षणिक असमानता और बढ़ेगी। संकटप्रतिरोधी शिक्षा के लिए आपदा प्रबंधन-, आपातकालीन आकस्मिक शिक्षा, वैकल्पिक शिक्षण योजनाएं, रेडियो, टेलीविजन, मोबाइलआधारित सामग्री और स्थानीय संसाधनों का उपयोग भी जरूरी है। UNESCO की संकटयोजना में जोखिम की पहचान-धारणा शिक्षासंवेदनशील शिक्षा योजना की अव-, तैयारी और प्रभावी प्रतिक्रिया पर बल देती है। इसलिए भविष्य की शिक्षा केवल ऑनलाइन माध्यमों से संचालित नहीं होनी चाहिए, बल्कि ऐसी लचीली, समावेशी और निरंतर शिक्षा प्रणाली विकसित करनी चाहिए, जो विभिन्न संकटों के बावजूद विद्यार्थियों को सीखने का अधिकार प्रदान कर सके। इसके लिए डिजिटल शिक्षा, संकट तैयारी, पेशेवर शिक्षण क्षमताएं और समावेशी शिक्षण तकनीक को शिक्षा का महत्वपूर्ण आधार बनाना आवश्यक है। इससे शिक्षा प्रणाली मजबूत होती है, हर छात्र को समान अवसर मिलते हैं और किसी भी आपातस्थिति में पढ़ाई बाधित नहीं होती।

14. युद्ध और शिक्षा के बीच नया वैचारिक संबंध-

विवेचनात्मक अध्ययन के आधार पर युद्ध, व्यापार, समाज और शिक्षा के बीच एक अंतर्संबंधित वैचारिक ढांचा विकसित किया जा सकता है, जिसे "War-Trade-Society-Education- Nexus कहा जा सकता है। यह दृष्टिकोण युद्ध के प्रभाव को केवल सैन्य और राजनीतिक स्तर से आगे बढ़ाकर ऊर्जा, व्यापार, परिवार, सामाजिक असमानता और शैक्षिक पहुंच तक देखता है।

इस संबंध को एक चक्रात्मक प्रक्रिया के रूप में समझा जा सकता है, जिसमें युद्ध से ऊर्जा और व्यापार में व्यवधान उत्पन्न होता है, उत्पादन एवं परिवहन लागत बढ़ती है, महंगाई का दबाव बढ़ता है, आय प्रभावित होती है, सामाजिक असमानता बढ़ती है और शैक्षिक पहुंच में बाधा आती है। इसका प्रभाव अंततः मानव पूंजी और दीर्घकालीन आर्थिक विकास पर पड़ता है। आर्थिक संकट के कारणनिम्न आय वाले परिवारों में शिक्षा व्यय घटता है, जिससे शिक्षा बाधित होती है, उच्च शिक्षा सीमित होती है और डिजिटल संसाधनों की कमी से डिजिटल विभाजन और गहरा होता है। लेकिन शिक्षा केवल प्रभावित पक्ष नहीं, बल्कि एक परिवर्तनकारी और सशक्त माध्यम भी है। शिक्षा और कौशल विकास नवाचार, ऊर्जा दक्षता, तकनीकी परिवर्तन, रोजगार और उत्पादन क्षमता बढ़ाते हैं, जिससे सामाजिक उदारता और आर्थिक स्थिरता मजबूत होती है। इसलिए प्राथमिकता युद्ध शिक्षा को प्रभावित करता है, लेकिन शिक्षा युद्ध और आर्थिक संकट के दीर्घकालीन प्रभावों को दिशा और तीव्रता दोनों में प्रभावित कर सकता है। यदि शिक्षा में ऊर्जा सुरक्षा, हरा कौशल, डिजिटल क्षमता, शांति शिक्षा, वैश्विक नागरिकता और संकट प्रबंधन को शामिल किया जाए, तो यह सामाजिक एवं आर्थिक स्थिरता का महत्वपूर्ण आधार बन सकता है। भारत और दक्षिणपूर्व एशिया के संदर्भ में यह ढांचा विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

शिक्षा को केवल संकट के प्रभाव के रूप में नहीं, बल्कि विकास नीति, मानव पूंजी निर्माण और राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय स्थिरता के साधन के रूप में देखा जाना चाहिए।"War-Trade-Society-Education- Nexus", शिक्षा अंतरराष्ट्रीय संबंध, अर्थशास्त्र, ऊर्जा सुरक्षा और मानव विकास के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर्विषयी शोध विषय है।

15. भारत के लिए प्रमुख नीतिगत सुझाव-

विद्यालयों और उच्च शिक्षा संस्थानों में ऊर्जा साक्षरता को एक अंतःविषय विषय के रूप में विकसित किया जाना चाहिए, ताकि विद्यार्थी ऊर्जा, अर्थव्यवस्था, पर्यावरण और भू राजनीति के अंतर्संबंध को समझ सकें। विश्वविद्यालयों में अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक अर्थशास्त्र-)IPE(, युद्ध अर्थव्यवस्था और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला जैसे विषयों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए, जिससे विद्यार्थी युद्ध के आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक प्रभावों का विश्लेषण कर सकें। आर्थिक संकट के समय शिक्षा बजट में कटौती करने की बजाय कमजोर वर्गों के लिए वित्तीय सहायता बढ़ाई जाए, ताकि शैक्षणिक असमानता नियंत्रित की जा सके। निम्न आय वर्ग के विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्ति, निःशुल्क पाठ्य सामग्री, डिजिटल उपकरण, परिवहन सहायता और पोषण कार्यक्रम मजबूत किए जाएं।
ऊर्जा संकट के कारण रोजगार और कौशल विकास के अवसर बदल रहे हैं, इसलिए सौर ऊर्जा, इलेक्ट्रिक वाहन, बैटरी तकनीक, ऊर्जा दक्षता, सतत कृषि और हरित निर्माण जैसे क्षेत्रों में व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण को व्यावहारिक एवं उच्च शिक्षा से जोड़ा जाए। इससे कौशल शिक्षा के माध्यम से हरित रोजगार और ऊर्जा दक्षता का विकास होगा, जो आर्थिक विकास के साथसाथ ऊर्जा सुरक्षा-, पर्यावरणीय स्थिरता और आर्थिक आत्मनिर्भरता को भी बढ़ावा देगा। विश्वविद्यालयों में भूति आधारित अध्ययन को बढ़ावा दिया राजनी-जाना चाहिए, ताकि विद्यार्थी अंतरराष्ट्रीय घटनाओं के केवल तथ्यात्मक न होकर उनके आर्थिक, सामाजिक और स्थानीय प्रभावों को भी समझ सकें। इसके लिए अंतःविषय अध्ययन को अर्थशास्त्र, भूगोल, ऊर्जा सुरक्षा और सामाजिक विज्ञान से जोड़कर पढ़ाया जाना चाहिए, जिससे विद्यार्थी युद्ध और वैश्विक संकटों के प्रभावों का गहन, आलोचनात्मक और अंतर्विषयी विश्लेषण कर सकें।

16. शिक्षाः संकट से अवसर की ओरः-

अमेरिका-ईरान संघर्ष और उससे उत्पन्न सामाजिक-आर्थिक अनिश्चितता को केवल संकट के रूप में नहीं, बल्कि शिक्षा व्यवस्था में आवश्यक परिवर्तन के अवसर के रूप में देखा जा सकता है। वर्तमान मानववैज्ञानिक परिस्थितियां संकेत देती हैं कि विश्वविद्यालयों को ऐसे नाटकीय बदलाव के लिए तैयार करना होगा जो न केवल किसी एक विषय के विशेषज्ञ हों, बल्कि ऊर्जा, तकनीक, अर्थशास्त्र, कूटनीति और सतत विकास के परस्पर संबंधित पहलुओं को समझ सकें। इसलिए अंतःविषय शिक्षा और समस्याआधारित अध्ययन को बढ़ावा देना आवश्यक है। इसी कारण शैक्षिक) शिक्षा में वैश्विक संकटकालीन शिक्षा शास्त्र-Global Crisis Pedagogy-GCPकी (विद्यार्थियों को केवल युद्ध या अंतरराष्ट्रीय संघर्ष की जानकारी देने के बजाय यह अवधारणा को स्थापित किया जाना चाहिए। शिक्षा समझाए कि किसी दूरस्थ क्षेत्र में हुई घटना स्थानीय स्तर पर ऊर्जा कीमत, कृषि लागत, रोजगार, महंगाई, व्यापार और शिक्षा को कैसे प्रभावित कर सकती है।इस शिक्षा से विद्यार्थी वैश्विक घटनाओं को स्थानीय संदर्भ में समझने, आलोचनात्मक चिंतन विकसित करने और समाधान हेतु रचनात्मक दृष्टिकोण अपनाने में सक्षम होंगे।

निष्कर्षः-

अमेरिकाईरान संघर्ष ने स्पष्ट किया है कि आधुनिक युद्ध का प्र-भाव केवल युद्धरत क्षेत्र तक सीमित नहीं रहता। समुद्री मार्गों में उपनिबंधन से तेल आपूर्ति, गैस कीमत, परिवहन, व्यापार, कृषि, उत्पादन, महंगाई और रोजगार पर व्यापक प्रभाव पड़ता है, जो अंततःपरिवार की आय, जीवन स्तर और शैक्षिक पहुंच को प्रभावित करता है। यह क्षेत्रीय संघर्ष ऊर्जाध को शिक्षा के गहरे अंतर्संबं- समाज-व्यापार - उजागर करता है।
भारत के लिए ऊर्जा सुरक्षा, चाबहार, INSTC वैकल्पिक व्यापार मार्ग, रणनीतिक विवेकशीलता और आपूर्ति श्रृंखला की मजबूती प्रमुख चुनौतियां हैं। दक्षिण पूर्व एशिया की ऊर्जा निर्भरता इसे मध्य-पूर्व से जुड़े आर्थिक अनिश्चितताओं के प्रति संवेदनशील बनाती है।इसलिए ऊर्जा स्रोतों का विविधीकरण और आर्थिक वैश्विकता पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।संकट सभी वर्गों पर समान रूप से प्रभाव नहीं डालता। निम्न और निम्नमध्यम वर्गीय परिवार पर ऊर्जा और खाद्य महं-गाई का अधिक प्रभाव पड़ता है, जो शिक्षा और स्वास्थ्य पर खर्च कम करता है। परिणामस्वरूप शिक्षा में व्यवधान, डिजिटल असमानता और मानव पूंजी विकास में कमी जैसी दीर्घकालीन चुनौतियां उत्पन्न होती हैं। इसलिए संकट के समय शिक्षा को केवल लागत नहीं, बल्कि निवेश के रूप में देखा जाना चाहिए। आधुनिक संदर्भ में राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधारणा को व्यापक और समेकित बनाना आवश्यक है। ऊर्जा सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा, आर्थिक वैश्विकता, सामाजिक न्याय, तकनीकी क्षमता और मानव पूंजी के साथ राष्ट्रीय सुरक्षा का मजबूत आधार बनता है। इसे मजबूत करने में शिक्षा की भूमिका केंद्रीय और निर्णायक होती है। भारत और दक्षिणयोग्यता के -पूर्व एशिया को भविष्य के शैक्षिक कालखंड में रोजगार-साथ संकट प्रतिरोधी ऊर्जासाक्षर-साथ, वैज्ञानिक आधारित, शांतिसमर्थक और वैश्विक नागरिकता के लिए तैयार करना आवश्यक है। पाठयक्रमों में ऊर्जा भूराजनीतिक-, वैश्विक व्यापार, जलवायु परिवर्तन, हरित तकनीक, शांति शिक्षा, मीडिया साक्षरता और संकट प्रबंधन को अंतर्विषयक रूप से शामिल करना चाहिए। 'युद्ध आर्थिक सीमाओं को तोड़ता है, व्यापार सामाजिक जीवन को प्रभावित करता है

और शांति दोनों के दीर्घकालीन प्रभावों की दिशा बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।’

इसलिए शिक्षा को केवल युद्ध और आर्थिक संकट से प्रभावित मानकर शांति, आर्थिक वैश्विकता, सामाजिक न्याय और मानव पूंजी के पुनर्निर्माण की रणनीतिक शिक्षा के रूप में देखना आवश्यक है।

संदर्भ सूची:-

1–Asian Development Bank- (2026)- Asian Development Outlook, April 2026.

2–Asian Development Bank- (2026)- Asian Development Outlook, July 2026.

3–IEA- (2026)- Southeast Asia Energy Outlook 2026- International Energy Agency.

4–ISEAS-Yusof Ishak Institute- (2026)- Southeast Asia and the Third Gulf War: Impact, Responses and Implications-

5–UNESCO- (2026)- Education in Emergencies: What You Need to Know.

6–UNESCO/IIEP- (2026)- Crisis&sensitive Educational Planning.

7– World Bank- (2026)- Global Economic Prospects, June 2026.

World Bank- (2026)- Middle East, North Africa, Afghanistan and Pakistan Economic Update.

9–World Bank-(2026)- Five Questions on How the War in the Middle East is Affecting Commodity Markets.

10–Government of India, Ministry of Commerce and Industry- (2026)- India–Iran Trade: Lok Sabha Unstarred Question No- 1750.

11–NUS Institute of South Asian Studies- (2026)- The United States–Iran Conflict: Economic Implications on India.

12–Reuters- (2026)- Reports on India's trade deficit, LNG supplies, shipping costs and Strait of Hormuz disruptions.